VOL- IX | ISSUE- III | MARCH | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों की प्रासंगिकता

- डॉ. केशव क्षिरसागर
हिंदी विभाग,
रामकृष्ण परमहंस महाविद्यालय,
उस्मानाबाद.

फणीश्वरनाथ रेणु जी उन उपन्यासकारों में से हैं जिन्होंने जनयुग को, जन रूचि को, अपनी चेतना का आधार बनाया I उनकी पहली रचना 'मैला आँचल' इस दृष्टि से एक प्रौढ़ कृति है I उसमें पारंपरिक कथा – सृष्टि का कोई तत्त्व नहीं मिलता, वह आँचलिक यथार्थवादी रचना हैं जिसने 'रेणुजी' को साहित्याकाश में दैदीप्यमान बना दिया I १९५४ में प्रकाशित 'मैला आँचल' से औपन्यासिक विचारधारा को एक नया मोड़ मिल गया, आँचलिक उपन्यासों का प्रचलन आरंभ हुआ I

आँचलिकता में कथा – सृष्टि की परंपरा का स्वरूप नहीं रह सकता क्योंकि आँचलिक उपन्यास अंचल विशेष की संस्कृति, उसके खान – पान, रीति – रिवाज, धर्म – विश्वास, भौगोलिक स्थिति आदि सभी तानों – बानों से कथानक का सुरम्य – सुगन्धित जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है जिसमें उस धरती की सौंधी सुगंध होती है वह विशिष्ट एवं अत्यंत यथार्थ कथानक होता है I 'मैला आँचल' में केवल आँचलिक जन – जीवन का चित्रण ही नहीं बल्कि उसमें तत्कालीन राष्ट्रिय, अंतर्राष्ट्रीय अतिविधियों का भी पर्याप्त मात्रा में चित्रण मिलता है I रेणु जी के आँचलिक उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अतिशय सीमित क्षेत्र की घटना भाषा और बोलचाल से सम्बद्ध होते हुए भी एक विलक्षण सांकेतिकता के द्वारा संपूर्ण राष्ट्रिय जीवन को ध्वनित और व्यंजित करते हैं I उन्होंने अपने उपन्यासों में क्षेत्र विशेष के जीवन की बारीक़ से बारीक़, विविधता का प्रदर्शन और चित्रण दवारा संपूर्ण सामयिक राष्ट्रिय जीवन – चेतना को अभिव्यक्त किया है I उनके उपन्यासों में स्थानिकता के आकर्षण के साथ – साथ गतिशील राष्ट्रिय चेतना की सम्पूर्णता का आकर्षण भी हैं I रूप, रस, गंध, स्पर्श के तो रेणुजी चितेरे कलाकार हैं I

"मैला आँचल" में स्वातंत्र्योत्तर भारत के नवोन्मेषित 'पूर्णियां' के मेरीगंज गाँव की कथा है, उनकी मैली जिंदगी और पिछड़ेपन की कहानी इसका मेरुदंड हैं जो सोते से अंगड़ाई लेकर जाग रहें हैं I जिसके आलोड़न – विलोड़न से मेरीगंज का पिछडा धूल भरा ''मैला आँचल' अपनी हर अच्छाई – बुराई, आशा – आकांक्षा, सुख – दुःख, हँसी – ख़ुशी, तीज – त्यौहार, आर्थिक – वैषम्य, नये – पुराने मूल्यों की टकराहट आदि के साथ अपनी समग्रता में उभरकर आया है, जिसमें एक काल विशेष का सजीव चित्र मूर्त्त हो उठा हैं I डॉक्टर प्रशांत के साथ मोटर में बैठी ममता देखती है – "विशाल मैदान, वन्ध्या धरती, यही है वह मशहूर मैदान नेपाल से शुरू होकर गंगा किनारे तक, वीरान धूमिल अंचल I"१ इसी धूमिल क्षेत्र के एक गाँव मेरीगंज के दागदार जीवन का यथा तथ्य, करुणा की आर्द्रता का संवेदनशील चित्रण रेणु जी ने किया है I उपन्यास की भूमिका में वे स्वयं लिखते हैं – "यह है मैला आँचल एक आँचलिक उपन्यास I कथानक है पूर्णिया, पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल I विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दखिन में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमा रेखा खींच देते हैं I मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतिक मानकर उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है I इसमें फूल भी हैं, शूल भी हैं, धूल भी हैं, गुलाल भी, कीचड़ भी, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी I"२ रेणु जिस

फोटोग्राफिक शैली से छोटे – छोटे स्नैपशॉट लेते गए हैं, उससे धूल भरा मैला आँचल जीवंत हो उठा है I रेणु जी को इस अंचल के ग्रामवासियों के प्रत्येक गतिलेश से निसर्ग सिद्ध सहानुभूति हैं I

रेणु जी का दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' उसी परंपरा की दूसरी कड़ी है जिसका आरंभ मैला आँचल से हुआ था I 'परती परिकथा' उस धूसर वीरान धरती की कथा है, जिसका प्रतिपाद्य है परानपुर I परती परिकथा अपने शीर्षक से ही अपनी कथावस्तु का संकेत देती है I इस इलाके के लोग परानपुर को सारे अंचल का प्राण कहते हैं I यही परानपुर ग्राम 'परती परिकथा' का मुख्य प्रतिपाद्य है I इसमें पूर्णिया जिले के दूसरे ग्राम परानपुर को अपेक्षाकृत उन्नत गाँव ले प्रतीक रूपं में चित्रित किया गया है I

'परती परिकथा' स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विकास और निर्माण की कथा है I इसमें स्वतंत्रता के पश्चात् जमींदारी – उन्मूलन और भूमि के पुनर्विभाजन की पृष्ठभूमि पर परानपुर के ग्राम्य जीवन की कथा का सुंदर चित्रण किया गया है, उसमें युगीन समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया गया है I रेणु जी लिखते हैं – "हिन्दुस्थान में संभवत: सबसे पहले पूर्णिया जिले पर ही लैण्ड सर्वे ऑपरेशन किया गया I जिले के जमींदारों और राजाओं की जमींदारियों का विनाश आवश्य हुआ है किन्तु हिन्दुस्थान के सबसे बड़े किसान यहीं बसते हैं I"३

परती परिकथा का दूसरा पहलु है, विज्ञान के माध्यम से ग्रामीणों के जीवन में आमूल परिवर्तन की कल्पना करना I जितेंद्र मिश्र द्वारा वन्ध्या जमीन पर गुलाब की खेती, रोमांटिक कल्पना होते हुए भी ग्रामीणों की दमित लालसा की अभिव्यक्ति है I पानी की समस्या को सुन्नरी नैका और दंता राकस की कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है I द्वितीय परिवर्तन में कोसी योजना का विधिवत वर्णन है I योजना विकास के प्रति जो उल्लास स्वतंत्रता के प्रथम दशक में रहा है वहीँ इस उपन्यास में भी अभिव्यक्त हुआ है I इस प्रकार रेणु जी ने यह स्पष्ट किया है कि भूमि भारतीय ग्रामीणों के जीवन का केंद्र है, जिसके द्वारा उनकी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याएँ निर्मित व् विघटित होती रहती है I

'परती परिकथा' देश के नवनिर्माण में जनता की स्वावलंबी चेतना का उपन्यास है I बावनदास महात्मा गांधी जी का प्रतिरूप है देश के उन काँग्रेसी नेताओं का जो पद का लोभ नहीं करते, गाँधीजी का अनुकरण करते रहें तथा अपने सिधान्तों के लिए जिए और मरे I बावनदास दुलारचंद कापरा द्वारा गाड़ी न हटाने पर अपना बलिदान कर देता है, यह आदर्श विशुद्ध गाँधीवादी हैं I आज के राजनीतिक दलों की स्खलित स्थिति का चित्रण भी 'परती परिकथा' में मिलता है I गाँव में मुख्यत: तीन राजनैतिक दल हैं समाजवादी, काँग्रेस, कम्युनिस्ट इन दलों के नेता महामूर्ख हैं I कुबेर सिंह के माध्यम से रेणु जी ने नगर – राजनीति की शुन्यता और अव्यवस्था पर भी प्रकाश डाला हैं I इस प्रकार 'परती परिकथा' उपन्यास में चित्रित स्थितियाँ आज भी जैसी की वैसी लागु होती हैं I

'जुलूस' नामक अपने तीसरे उपन्यास में रेणु जी ने समसामयिक गतिविधियों का सुंदर चित्रण किया है I रेणु जी कहतें है कि यह भारतीय जीवन एक अर्थ हीन 'जुलूस' हैं I 'जुलूस' की भूमिका में वे लिखते है – "पिछले कुछ वर्षों से मैं एक अद्भुत भ्रम में पड़ा हूँ दिन – रात, सोते – बैठते, सोते – बैठते, खाते – पीते मुझे लगता है एक विशाल जुलूस के साथ चल रहा हूँ अविराम I"४ 'जुलूस' उपन्यास १९४७ के विभाजन के परिणाम स्वरूप विस्थापित हुए जिला मैमन सिंह के गाँव जुमापुर के हिन्दुओं की संघर्ष गाथा हैं I जिन्हें बिहार के पूर्णिया जिले में बसाया जाता है, इसे विस्थापित बंगाली नौबिन नगर भी कहते हैं I तो पड़ोसी गोडियर गाँव के बिहारी लोग इसे 'पाकिस्तानी टोला' कहते हैं I जिस तरह यशपाल जी ने 'झूठा सच' में विशाल कैनवास पर वतन और देश की समस्या को अभिव्यक्त किया है उसी तरह रेणु जी ने बहुत ही सीमित और छोटे फलक पर उसकी सशक्त मर्मस्पर्शी झाँकी प्रस्तुत की है I जुलूस में युग – बोध और समसामयिकता के दर्शन होते हैं, तत्कालीन राजनीति का सुंदर वर्णन जुलूस की पहचान बन गया है – "एक झूठ को दूसरे झूठ से, दूसरे झूठ को तीसरे झूठ से और तीसरे को चौथे से ढँकते – ढँकते मूल झूठ की जड़ मजबूत हो जाती हैं I"५

'दीर्घतपा' रेणु जी का चौथा आँचलिक उपन्यास हैं I इस उपन्यास में तपी हुई नारी की कथा हैं, जो देश की आजादी के नाम पर कुछ सह गई और बांके

की कायरता का फल बहुत दिनों तक भोगती रही I इसमें बांकीपुर के 'विमेन्स वेलफेअर बोर्ड' नामक समाज सेवी संस्था का वर्णन हुआ है I सांकेतिक रूप में रेणु जी ने यही बताने की कोशिश की है कि देश में इस प्रकार के विमेन्स वेलफेअर संस्थाओं को किस प्रकार स्वार्थ – सिद्धि के लिए बड़े लोंगों, पूँजीपतियों, मंत्रियों की कामुकता के लिए चकला घर बना दिया जाता है I अंजु – मंजू जैसी लड़कियों से कम वासना की तुष्टि की जाती है I मिसेज आनंद जैसी महिला कार्यकर्ता की आज देश में कमी नहीं हैं जो ऐसी संस्थाओं की सम्माननीय सचिव हैं जो संस्थाओं में आनेवाली दवा और दूध के स्टॉक बड़ी सफाई से गायब कर देती है और पच्चीस हजार रुपये का फायदा कर लेती हैं I रेणु जी ने इसके माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि किस स्तर तक आदमी गिर सकता है, स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार घूसखोरी किस हद तक सभी स्तरों पर काम कर रही है I स्त्री – पुरूषों की कामुकता ने समाज में अनैतिकता का वातावरण प्रस्तुत कर दिया है I

'कितने चौराहे' रेणु जी का पाँचवा उपन्यास हैं, जो मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करनेवाले जीवित राष्ट्र की प्राणवती गाथा प्रस्तुत करता है I गाँधीजी का सत्य, सेव एवं अहिंसा पर आधारित नीति और भगतसिंह जैसे देशभक्त क्रांतिकारियों क संघर्ष से १९६५ के पाकिस्तानी आक्रमण तक, यह राष्ट्र एक के बाद एक कितनें चौराहों को पार करता गया इस वास्तविकता का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास का प्रमुख विषय रहा हैं I कुछ स्वार्थी तत्त्व हिन्दुस्थान – पाकिस्तान के नाम पर लुट – खसोट चाहते रहे हैं किन्तु नवनिर्मित राष्ट्र ज्वलंत समस्याओं का सामना करता हुआ राह में आई हुई बाधाओं का सामना करता हुआ आगे ही बढ़ता हुआ कितने ही चौराहों को पार कर अपने मुख्य गंतव्य की ओर आगे ही बढ़ता जा रहा है I

गाँव में भी नवयुग की चेतना का प्रभाव पड़ता है गाँधीजी की गिरफ्तारी ने युवकों को उत्तेजित कर दिया है I वे सब मिलकर कहते हैं हम लोग हड़ताल करेंगे, स्ट्राइक, स्कुल नहीं जायेंगे I बाजार बंद रहेगा, हम लोग खाना नहीं खाएँगे I इसमें सन १९३३ – ३४ के राजनीतिक भारत का चित्रण हैं I

'पल्टू बाबु रोड' रेणु जी का अंतिम उपन्यास हैं, जो देश के विभाजन की त्रासदी को अत्यंत मार्मिकता से स्पष्ट करता है I इसका एक पात्र घंटा कहता है – "साइकोएनालिसस के लिए घर ही सर्वोत्तम लेबोरेटरी है I"६ इसमें पल्टू बाबु के रूप में रेणु जी ने आज के राजनीतिज्ञों तथा उनकी कुटिल बुद्धि को रूपायित किया है I बहुपार्टी व्यवस्था के कारण समाज का स्वरूप दिनों दिन गिरता ही चला गया I औदयोंगीकरण के कारण आज मनुष्य जीवन की जो प्रधान – वृत्ति है प्रेम उसका भी व्यवसायीकरण हो गया है I न उम्र की, न पारिवारिक संबंध की और न नैतिकता की सीमा रह गई है I

रेणु जी के सभी उपन्यासों की कथानक – सृष्टि में जिस कौशल का परिचय मिलाता है वह भी बहुत सरल, सहज और स्पष्ट है I जो अत्यंत यथार्थवादी, चेतना का निरूपण करनेवाला है जिसमें मनुष्य का जीवन और उसका परिवेश अपनी समस्त जटिलताओं एवं संपूर्ण विसंगतियों के साथ उजागर होता जाता है I उन्होंने जो कुछ देखा, भोगा और महसूस किया है उसकी प्रमाणिक अभिव्यक्ति अपनें उपन्यासों के माध्यम से समाज के सामने रखने की कोशिश रेणु जी ने की है, जो अत्यंत सराहनीय और आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उस समय थी यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता एवं उपलब्धि हैं I

संदर्भ : -

१) आलोचना : अक्टूबर, १९५७, १५
२) मैला आँचल – प्रथम संस्करण १९५४ भूमिका
३) परती परिकथा – पृ. क्र. २३ - २४
४) जुलूस : भूमिका
५) जुलूस : पृ. क्र. ११७
६) पल्टू बाबु रोड – पृ. क्र. १७